B-2
L-8

दिनांक
02-11-23

द्वितीय चरण (1813-57) :

- यह चरण मुक्त व्यापार का दौर कहलाया मुक्त व्यापार को अपनाने के पीछे मुख्यतः दो कारक उत्तरदायी थे-

a- ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति की सफलता से वहां एक नया मध्यम वर्ग पैदा हुआ जिसने ब्रिटिश संसद पर दबाव डाला कि भारत का बाजार सभी के लिये खोला जाये अन्यथा औद्योगिक क्रांति की सफलता दीर्घकालिक नहीं रहेगी।

b- एडम स्मिथ द्वारा प्रचारित अहस्तक्षेप का सिद्धांत भी इस समय लोकप्रिय हो रहा था, जिसके अनुसार बाजार के मामलों में राज्य को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
© KHAN SIR

प्रभाव -

अंग्रेजों ने वास्तव में एकतरफा मुक्त व्यापार की नीति अपनाई और आयात निर्यात की दरें अपने अनुकूल निर्धारित कर ब्रिटिश सामग्री को भारतीय बाजार में चारों तरफ पहुंचा दिया और पक्षपाती कर (Tax) नीति के द्वारा भारतीय वस्तुओं की ब्रिटिश बाजार में पहुंच को प्रभावित करने का प्रयास किया। इसी सन्दर्भ में कार्ल मार्क्स ने कहा था " अंग्रेजों ने अपनी कुटिल चालों से विश्व के कपड़ों के घर को अपने कपड़े से भर दिया"।

- चूंकि औद्योगिक क्रांति की सफलता कच्चे माल की सहज उपलब्धता पर निर्भर करती है अतः भारत के विस्तृत

क्षेत्र और विविध जलवायु के अनुसार अंग्रेजों ने भारत को अपना कृषि उपनिवेश बना दिया अर्थात ब्रिटिश उद्योगों की आवश्यकता के अनुसार भारत में विभिन्न नकदी फसलों की खेती कराई जाने लगी और इस तरह भारत में कपास व नील जैसी वाणिज्यिक फसलों की खेती को बढ़ावा दिया गया।

- इस दौर में भारतीय परम्परागत उद्योगों/हस्तकला उद्योगों का गला घोंट दिया और शहरी कारीगर या तो गाँव की ओर लौटने को विवश हुआ या फिर उसे मुखमरी का सामना करना पड़ा और जिस तरह बड़ी संख्या में कारीगरों दस्तकारों तथा तन्तुवायों (बुनकर) की मृत्यु हुई। इस सन्दर्भ में लॉर्ड विलियम बेंटिंक ने कहा भारत के मैदानों में सर्वत्र बुनकरों की हड्डियाँ इस तरह फैली हैं कि ये मैदान चांदी जैसे चमक रहे थे।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

विशेष - 1813-57 के दौर में ब्रिटिश शक्ति इतनी शक्तिशाली हो चुकी थी कि अब अपने हितों को साधने के लिये उसने भारत के सामाजिक, शैक्षणिक व सांस्कृतिक मामलों में भी हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया था।

तृतीय चरण (1860 के बाद) :-

- 1860 के बाद तीसरे चरण के रूप में वित्तीय पूंजीवाद को अपनाया गया जिसमें निवेश के द्वारा अधिक पूंजी कमाने का उद्देश्य निहित होता है।

कारण :

- 1857 के महाविद्रोह के बाद भारत के साथ अपने आर्थिक संबधों को उदारवादी रूप देना आवश्यक हो गया था जिससे भारतीयों के असंतोष को कम किया जा सके।

- स्वेज नहर के खुलने के काल यूरोप से एशिया की दूरी कम हुई और इस समय तक औद्योगिक क्रांति ब्रिटेन से बाहर अन्य यूरोपीय देशों में भी प्रसारित होने लगी थी जिससे अंग्रेजों को प्रतिस्पर्धा का भय हुआ और वे भारत जैसे बाजार को किसी भी कीमत पर खोना नहीं चाहते थे।

- भारत की भवसंरचना में निवेश कर अधिक लाभ के साथ ही भारतीय अर्थव्यवस्था पर नियंत्रण और कच्चे माल की निरंतर आपूर्ति को भी सहज बनाये रखा जा सकता था

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

प्रभाव :

- प्रथम दो चरणों से ब्रिटेन में जो अतिरिक्त पूंजी पैदा हुई थी उसे भारत में निवेश के लिये सुनहरा अवसर था और इसी सन्दर्भ में अंग्रेजों ने रेल, सड़क, बन्दरगाह, बीमा बैंक तथा कुछ आधुनिक उद्योगों में भी निवेश किया।

स्पष्ट हो जाना चाहिए कि अंग्रेजों का आधुनिक अवसंरचनाओं में निवेश का उद्देश्य भारत का आधुनिकीकरण न होकर अपने स्वार्थों की अधिकतम पूर्ति करना था इसी लिए उन्होंने भारत में सीमित व नियंत्रित

औद्योगीकरण को बढ़ावा दिया।

अंग्रेजों ने अब भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक मामलों में सावधानी से हस्तक्षेप करने की नीति बनाई अर्थात एक प्रकार से अंग्रेजों ने परम्परागत व रूढ़िवादी तत्वों से समझौता कर लिया था।

निष्कर्षतः तीन चरणों में अंग्रेजों ने भारत को अपना "पूर्ण उपनिवेश" बना लिया- अब भारत ब्रिटिश उद्योगों के लिए कच्चा माल उत्पादक, ब्रिटिश विनिर्मित सामग्री के लिए बेहतर बाजार तथा ब्रिटिश पूंजीपतियों के निवेश के लिए सर्वाधिक सुरक्षित व लाभदायक केन्द्र बन गया और भारतीय अर्थव्यवस्था को पूरी तरह परजीवी बना दिया गया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

भारत में रेलवे का विकास :-

- भारत में लार्ड डलहौजी द्वारा रेलवे विकास की नींव रखे जाने को ऐतिहासिक माना जाता है और आधुनिक संकल्पना के अनुसार भी "किसी भी देश में रेल का प्रवेश आधुनिकीकरण के आरम्भ का सूचक माना जाता है।" ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी व जापान जैसे देशों की औद्योगिक क्रांति में ऐसा देखा भी गया।

किन्तु भारत में रेलवे का विकास आधुनिकीकरण की बजाय औपनिवेशिक शिकंजा कसने का उपकरण अधिक साबित हुआ क्योंकि अंग्रेजों का मंतव्य सकारात्मक न

होकर ब्रिटिश हितों की पूर्ति से प्रेरित था —

1- ब्रिटेन के निजी व सार्वजनिक निवेश पर गारन्टी युक्त ब्याज दिया गया इसीलिए प्रारम्भिक घाटे के बावजूद निवेशकों को 5% का ब्याज दिया जाना अंग्रेजों के वास्तविक चरित्र को स्पष्ट कर देता है।

2. भारतीय अर्थव्यवस्था का आशय था गांव और गांव से कच्चा माल लेजाना अंग्रेजों की प्राथमिकता थी अतः इसलिए गांव से कच्चे माल को बाजार लाने की प्रेरणा ने भारत में रेलवे के विकास को बढ़ावा दिया।

अंग्रेज यह बखूबी जानते थे कि गांवों की आत्मनिर्भरता को नष्ट किये बगैर ब्रिटिश हितों की पूर्ति नही की जा सकती। अतः अंग्रेजों ने रेल के द्वारा गांव के उस बंद कोठरी दरवाजे को तोड़ दिया जो बड़े-बड़े राजा या सेनापति नही कर सके थे।

3- विद्रोह के समय ब्रिटिश सेना को तेजी से प्रसारित करने के उद्देश्य से।

प्रभाव -:

इस तरह अमेरिका, जापान, जर्मनी या इटली में रेल ने जो कर दिखाया वैसा भारत में नही हुआ क्योंकि यह तो औपनिवेशिक स्वार्थों की पूर्ति करने के उद्देश्य से ही स्थापित की गयी थी और रेल परम्परागत भारतीय अर्थव्यवस्था की बर्बादी का एक प्रमुख कारण बन गयी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

यद्यपि रेलवे से जुड़े कुछ अन्य सहयोगी कारखानों की स्थापना ने भारत में क्रमशः इस चेतना को अवश्य जन्म दिया कि भारत का वास्तविक विकास तभी हो सकेगा जब भारतीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर यहां अवसंरचनात्मक व औद्योगिक विकास किया जायेगा। रेलवे का एक सकारात्मक परिणाम यह हुआ कि यातायात व परिवहन की गतिशीलता बढ़ी। अलग-थलग पड़े क्षेत्रों का एकीकरण हुआ और भारतीय समाज में व्याप्त जातिवाद व छुआछूत जैसी कुरीतियों पर प्रहार हुआ।

उदारवादी नेताओं ने रेल विकास को महत्वपूर्ण मानकर ब्रिटिश शासन की प्रशंसा की किन्तु तिलक जैसे राष्ट्रवादी नेता ने इस पर व्यंग किया कि इस पर प्रसन्न होना वैसा ही है जैसे किसी दूसरे की स्त्री को सजा देखकर होना।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

धन की निकासी :-

सामान्य अर्थशास्त्रीय परिभाषा के अनुसार यदि किसी देश का व्यापार सन्तुलन उसके प्रतिकूल (आयात > निर्यात) हो तो यह धन की निकासी का द्योतक माना जाता है किन्तु ऐतिहासिक सन्दर्भ में धन की निकासी की परिभाषा विशिष्ट हो जाती है क्योंकि औपनिवेशिक शासन के दौरान भारत की सम्पत्ति बल पूर्वक ब्रिटेन भेजी जाती रही और इसके बदले भारत को किसी प्रकार का आर्थिक

भौतिक या नैतिक लाभ नही हुआ, दादा भाई नौरोजी ने बल पूर्वक एकतरफा धन की निकासी का ही विश्लेषण किया

"दादा भाई नौरोजी ने सर्वप्रथम इसे इंग्लैंड डेब्ट टू इंडिया नामक निबंध में और बाद में अपने सबसे लोकप्रीय लेख पॉवर्टी एण्ड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया में व्यवस्थित रूप से लिखा"।

धन की निकासी

⇓

प्रक्रिया

युद्ध

- युद्ध / संन्धियों द्वारा
- एकाधिकार द्वारा
- राजकोशीय विनियोजन द्वारा
- बंगाल में द्वैध शासन व अन्य प्रशासनिक नीतियों के द्वारा

होम-चार्ज

- वेतन व पेंशन
- कंपनी के शेयर धारकों को आधिक लाभांश देना तथा निजी व सार्वजनिक निवेश पर गारन्टी युक्त ब्याज देना
- भारत से बाहर लड़े गये युद्धों का बोझ भी भारतीय राजकोष पर डालना।
- इण्डिया स्टोर की ब्रिटेन में स्थापना कर भारत के नाम पर अनैतिक खरीद की जाती रही।

धन की निकासी में होम-चार्ज का महत्व बढ़ता ही गया 19वीं सदी के उत्तरार्ध में यह 10-13% था जो प्रथम विश्वयुद्ध तक 40% तक जा पहुंचा।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR